
Sitashtakam Ratnapanchakam 2

सीताष्टकम् रत्नपञ्चकम् २

Document Information

Text title : Sitashtakam (Ratnapanchakam 1)

File name : sItAShTakam.itx

Category : devii, devI, sItA, aShTaka

Location : doc_devii

Author : Kalyanasevaka

Proofread by : Brahatha Mohan

Latest update : May 22, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 22, 2026

sanskritdocuments.org

Sitashtakam Ratnapanchakam 2

सीताष्टकम् रत्नपञ्चकम् २



(रत्नपञ्चके द्वितीयं रत्नम् ।)

सीता सदा प्रकृतिरेव परात्मशक्ति-
र्वागीश्वरी सकलवेदमयी प्रपूर्णा ।
श्रीरामयन्द्रयरणो सततं विलीना
मायामयी निभिलदेवमयी वरेण्या ॥ १ ॥

सत्याऽमृता संसृतिबीजरूपा
साकाररूपं सकलं दधाना ।
श्रीरामसान्निध्यवशात्स्वतन्त्रा
ज्ञेया मनुष्येन्द्रसुरासुरैश्च ॥ २ ॥

मडामाया सीता निभिलजगद्गुत्पादनकरी
मडालक्ष्मीर्देवी सकलकृलदात्री त्रिभुवने ।
डियाशक्तिः साक्षादनवरतविधानिधिपरा
निमेषोन्मेषात्सा भुवनलयकर्त्री जनकजा ॥ ३ ॥

नित्यानन्दा परमसुभदा नित्यतृप्ता प्रसन्ना
पञ्चभ्रान्तिप्रणिरसनतश्चात्मबोधप्रदात्री ।
विधाविधासकलभवलीभ्रान्तिभेदप्रदन्त्री
सर्वोत्कृष्टा लृढयकमले जानकी मे सदाऽस्ति ॥ ४ ॥

भद्रा दुर्गा ज्ञानविज्ञानरूपा ॥

शान्ता काली भुक्तिमुक्तिप्रदात्री ।
नित्या पूर्णा विश्वमाताऽऽत्मविधा
लब्धा सीता शारदा वेदमाता ॥ ५ ॥

तुरीयातीता मा परमवरदा श्रीश्च धनदा
विधानी सावित्री सकलसुभदात्री ह्यभयदा ।

सकामानां भीतिर्न तु भवभयं स्वात्मसुप्तिनां
सुसौम्यं चित्पूर्णा भजति मनुजो मातृकृपया ॥ ६ ॥

वेदान्तार्थस्वरूपा परमसमरसा व्यापिनी ज्ञानिरूपा
रुद्रादित्यादिरूपाऽभिलविधसुभेदा मोक्षदा ज्ञानगङ्गा ।
मुक्तालङ्कारयुक्ताऽभयवरदकरा सिद्धिदा रामपत्नी
पद्माक्षी पद्मलस्तामलतमवपुषी सन्ततं शं तनोतु ॥ ७ ॥

सीता सिता प्रभवदा प्राणवात्मिकेयं
प्राणेश्वरी परतमा परमाऽन्नपूर्णा ।
सूर्येन्दुशङ्कशिवरामसुदोषघात्री
शिख्येतनामतिकलास्वसुषैकदात्री ॥ ८ ॥

कल्याणसेवकवृद्धिस्थसरस्वती या
सीता प्रभा कमलजा भगवत्प्रिया मा ।
व्यक्ता सुवाकसकलकामदुहा य धेनुः
सर्वा-सदा विमलभक्तजनान्प्रपातु ॥ ९ ॥

एति श्रीसमर्थरामदास-कल्याणपदान्वित-
कल्याणसेवकप्राणीत रत्नपञ्चके द्वितीयं रत्नं सीताऽष्टकं सम्पूर्णम् ।

-
Proofread by Brahadha Mohan

—
Sitashtakam Ratnapanchakam 2

pdf was typeset on May 22, 2026

—

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

